रविवार

• प्रदीप शुक्ल

रविवार को बंद रहता था स्कूल
छुपकर आराम करती थीं किताबें
पुरानी पैंट के झोले में
कॉपियों पर पैर फैलाकर
लेकिन, उठ जाते थे हम सब
रुटीन से काफ़ी पहले
कभी मूंगफली बोने,
गेहूं के खेत में पानी लगाने,
अरहर के मजबूत पेड़ को
बांके के एक ही वार से
गिरा देने का सुख लूटने

मुंह अंधेरे, साइकिल पर बस्ते की जगह
होता था डीज़ल का जरीकेन
कभी होती ओस भरी पतली मेड़ पर
डगमगाती साइकिल के कैरियर में,
पुरानी रबर ट्यूब से कसी गेहूं की बोरी

रविवार को ही लगता था
साप्ताहिक बाज़ार
लानी होती थी पूरे हफ़्ते की सब्ज़ी,
डालडा, भैंस के लिए खली,
लालटेन का शीशा

कभी-कभी, ख़राब मौसम में
मुस्कराता था रविवार
होती थी कबड्डी,
उफनाए ताल में तैराकी प्रतियोगिता
ऊदल का ब्याह या माड़ो की लड़ाई,
दहला पकड़

मैंने कभी अलसाया हुआ रविवार
नहीं देखा बचपन में।

अम्मा को अब भी है याद

• प्रभुदयाल श्रीवास्तव

नाना खेतों में देते थे,
कितना पानी कितना खाद।
अम्मा को अब भी है याद।

उन्हें याद है बूढ़ी काकी,
सिर पर तेल रखे आती थीं।
दिवाली पर दीये कुम्हारिन,
चाची घर पर रख जाती थीं।
मालिन काकी लिए फुलहरा,
तीजा पर करती संवाद।
अम्मा को अब भी है याद।

चना-चबैना नानी कैसे,
खेतों पर उनसे भिजवातीं।
उछल-कूद करते-करते वे,
रस्ते में मस्ताती जातीं।
ख़ुशी-ख़ुशी देकर कुछ पैसे,
नानाजी देते थे दाद।
अम्मा को अब भी है याद।

खलिहानों में कभी बरोना,
मौसी भुने सिंगाड़े लातीं।
उसी तौल के गेहूं लेकर,
भरी टोकरी घर ले जातीं।
वही सिंगाड़े घर ले जाने,
अम्मा सिर पर लेतीं लाद।
अम्मा को अब भी है याद।

छिवा छिवौअल गोली कंचे,
अम्मा ने बचपन में खेले,
नाना के संग चाट-पकौड़ी,
खाने वे जाती थीं ठेले।
छोटे मामा से होता था,
अक्सर उनका वाद-विवाद।
अम्मा को अब भी है याद।

नानी थी धरती से भारी,
नाना थे अम्बर से ऊंचे।
हंसते-हंसते बतियाते थे,
सब दिन उनके बाग़-बग़ीचे।
घर-आंगन में गूंजा करते,
हर दिन ख़ुशियों से सिंह नाद।
अम्मा को अब भी है याद।

हुल हुल हुल

• दामोदर अग्रवाल

हुल हुल हुल हुलुल हुलुल,
घोड़े हिन हिन हिन हिन,
गाय-बैल बांय-बांय,
खच्चर चीपों चीपों,
सन्नाटा सांय सांय।

अच्छा बोलो बच्चो
गुबरैला क्या कहता?
गुबरैला कहता है,
ढुल ढुल ढुल ढुलुल ढुलुल

तुरही कहती टें टें
डुगडुगिया डिमिर डिमिर,
चंदा आहा! आहा!
तारागण टिमिर टिमिर

अच्छा बोलो बच्चो,
लहरें क्या कहती हैं?
लहरें कहतीं कुल कुल,
कुल कुल कुल, कुलुल कुलुल।

भट्ठी कहती चिड़ चिड़,
भूजा कहता तिड़ तिड़
बकरी में में में में,
भेड़ें भिड़ भिड़ भिड़ भिड़

अच्छा बोलो बच्चो
चरवाहा क्या कहता?
चरवाहा कहता है,
हुल हुल हुल, हुलुल हुलुल।

बचपन के गीत

बच्चों के संसार को ठीक-ठीक प्रतिबिम्बित करने वाली बाल-कविताएं लिखना बच्चों का खेल नहीं है, इसके लिए गहरी संलग्नता, ऊष्मा और आश्चर्यदृष्टि की ज़रूरत होती है।

सौभाग्य से हमारी भाषा में बाल-कविताएं लिखने वाले समर्थ रचनाकारों की कमी नहीं है। उन्हीं की रचनाओं से कुछ बानगी हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

इन कविताओं में आप देखेंगे कि अनेकानेक चित्र ठीक उसी तरह से उभरकर आए हैं, जैसे कि वो बच्चों की सजल कल्पनाओं का हिस्सा बने होते हैं।

सबसे पहले

• हरिवंशराय बच्चन

आज उठा मैं सबसे पहले।
सबसे पहले आज सुनूंगा।
हवा सवेरे की चलने पर,
हिल, पत्तों का करना 'हर-हर'
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले।

आज उठा मैं सबसे पहले।
सबसे पहले आज सुनूंगा,
चिड़िया का डैने फड़फड़ाकर,
चहक-चहककर उड़ना 'फर-फर'
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले।

आज उठा मैं सबसे पहले।
सबसे पहले आज चुनूंगा,
पौधे-पौधे की डाली पर,
फूल खिले जो सुंदर-सुंदर
देखूंगा, पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले।

आज उठा मैं सबसे पहले।
सबसे कहता आज फिरूंगा,
कैसे पहला पत्ता डोला,
कैसे पहला पंछी बोला,
कैसे कलियों ने मुंह खोला,
कैसे पूरब ने फैलाए बादल पीले,
लाल, सुनहले।

आज उठा मैं सबसे पहले।

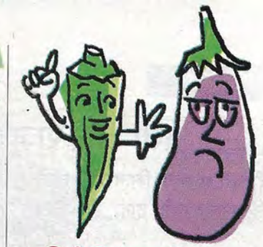

भिंडी रानी आलू राजा

• सूरजपाल चौहान

भिंडी बोली बैंगन से-
'बे-पेंदी के लोटे तुम,
पेट फुलाए फिरते हो जी,
तुममें नहीं एक भी गुन।'

टिंडे के सिर पर हाथ फेरकर,
इठलाकर बोली वह यूं-
'गंज खोपड़ी सिलबट्टे-सी
लिए-लिए फिरते हो क्यूं।'

लाल टमाटर पर गुर्राई-
'तू तो सबसे मिला हुआ,
पेट है तेरा पिलपिल-पिलपिल-
खट्टे रस से भरा हुआ।'

घीया को वह दिखा अंगूठा,
निकल गई सबसे आगे
तोरई, कद्दू, फली ग्वार की,
उसकी राह छोड़ भागे।

अकड़ देखकर यूं भिंडी की,
आलू ने अब तोड़ा मौन,
कहा- 'अरी ओ भिंडी रानी,
तुम्हें पता है, हूं मैं कौन?'

'चल हट, चल हट आगे से तू
पड़ा नहीं मुझसे पाला,
मेरी पतली कोमल काया,
तू ठहरा मोटा लाला।'

'ठहर ज़रा' आलू यों बोला-
अब मत इतने गाल बजा,
तू तो है बरसाती मेंढक,
तुझको पूछे कौन भला?'

गोभी मेरी संग-सहेली,
गाजर करती प्यार बड़ा,
बैंगन मेरा भैया है तो-
पालक हरदम साथ खड़ा।

जो दूजे को बुरा बताता,
स्वयं बुरा वह बन जाता,
संग-संग जो रहता सबके,
वह कहलाता है राजा।

पेड़

• रमेश कौशिक

तुम्हारी मेज-कुर्सी
जिस पर तुम पढ़ते हो/ मैं हूं।

मेले में काठ का घोड़ा
जिस पर तुम चढ़ते हो/ मैं हूं।

गांव में लकड़ी का पुल
जिस पर तुम चलते हो/ मैं हूं।

नाव जिसमें बैठ
तुम नदी पार करते हो/ मैं हूं।

पतला-सा काग़ज़
जिस पर तुम लिखते हो/ मैं हूं।

साहित्य अकादमी से प्रकाशित पुस्तक **प्रतिनिधि बाल कविता-संचयन** से

चयन एवं सम्पादन

• **दिविक रमेश**

हिंदी के वरिष्ठ कवि, बाल साहित्यकार, आलोचक एवं अनुवादक।

अंग्रेज़ी, कोरियाई एवं पंजाबी भाषा के ज्ञाता। 11 कविता संग्रह सहित बाल साहित्य की लगभग 45 पुस्तकें प्रकाशित।

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, एनसीईआरटी का राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार आदि कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मानों से अलंकृत।